आधुनिक युग में हिंदी मुहावरों की उपयोगिता का मूल्यांकन

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

हिंदी में पी.एच.डी. उपाधि हेतु
शोध प्रारूप

शोध निर्देशक
JVN डॉ. रवि प्रकाश मिश्र

शोधार्थी
JVN धनवन्ती सोनगरा

शिक्षा और कार्यप्रणाली संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान) भारत

2020

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	पृष्ठ भूमि	
2.	विषय एवम् अध्ययन क्षेत्र	
	निर्माण के आधार पर	
	व्याकरणिक संरचना के आधार पर	
	अर्थीथ विश्लेषण के आधार पर	
3.	उद्देश्य	
4.	अध्ययन की रूपरेखा	
	(1) मुहावरे का अर्थ परिभाषा स्वरूप एवम् विकास	
	(2) मुहावरे की उपयोगिता :–लिखित एवम् मौखिक रूप में	
	(3) साहित्य में मुहावरों की आवश्यकता	
	(4) वर्तमान सन्दर्भ में मुहावरे की उपादेयता	
	(5) भविष्य में मुहावरों की प्रसांगिकता एवम् अप्रसांगिकता	
	(6) उपसंहार	
5.	शोध परिकल्पना	
6.	शोध प्रश्न	
7.	शोध पद्धति	
8.	साहित्य अवलोकन	
9.	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवम् वेब लिंवान	

1. पृष्ठभूमि :–

मुहावरे का शाब्दिक अर्थ होता है–अभ्यास। विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश को 'मुहावरा' कहा जाता है। मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता है, इसलिये इसका स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता है। हिन्दी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुन्दर 'प्रभावशाली' सक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिये किया जाता है।

मुहावरे बात करने की एक शैली है जो अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है। लक्षणा व व्यंजना द्वारा वह सिद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित हो कर 'रूद' हो गया हो तथा प्रत्यक्ष अर्थ की बजाय सांकेतिक अर्थ प्रदान करता हो। मुहावरों के विशेष अर्थो में कभी बदलाव नहीं होता है। ये हमेशा एक जैसे रहते है, ये लिंग, वचन, क्रिया के अनुसार वाक्यों में प्रयुक्त किये जाते है। 'मुहावर' एक ऐसा वाक्यांश है, जो रचना में अपना विशेष अर्थ प्रकट करता है। हिन्दी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुन्दर, प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिये किया जाता है। इसका प्रयोग करते समय इसका शाब्दिक अर्थ न लेकर विशेष अर्थ को लिया जाता है। इसके विशेष अर्थों में कभी बदलाव नहीं होता है।

हिन्दी मुहावरों क परिभाषा को इस प्रकार स्पष्ट कर सकते है :– 'मुहावरा' शब्दों का वह क्रम है, या समूह है जिसमें सभी शब्दों का अर्थ एक साथ मिलाकर लिखा जाता है। हिन्दी उर्दू में लक्षणा अथवा व्यजंना के सहयोग से जो वाक्य लिखा जाता है, उसे 'मुहावरा' कहते है। किसी भाषा की विशिष्ठ अभिव्यंजना पद्धति को 'मुहावरा' कहा जाता है। मुहावरे भाषा में नींव का पत्थर है, जिस पर वह भव्य भवन् आज तक टिका हुआ है, अर्थात् हिन्दी शब्द कोश, समाज एवम् साहित्य में मुहावरों का महत्व आज भी बना हुआ है। किसी भाषा में पायी जाने वाली असाधारण शब्द योजना 'मुहावरा' कहलाता है। भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्ति इकाई को मुहावरा कहते है जिसका प्रयोग 'रूद्र' लक्षणा में होता है। जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को ना बताकर विशेष अर्थ को बताते है तथा साथ में क्रिया का काम करते है, वह मुहावरे कहलाते है। मुहावरे का मूल रूप कभी नहीं बदलता अर्थात् मुहावरे का स्वरूप 'स्थित' होता है। जैसे– 'कमर टुटना' एक मुहावरा है–इसके स्थान पर 'कोटि भंग' शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। हिन्दी के अधिकांश मुहावरों का सम्बन्ध सीधा शरीर के विभिन्न अंगों से होता है। जैसे–मुँह, नाक, कान, हाथ, पाँव आदि जैसे मुँह की खाना, कान खड़े होना, अपने पाँवों पर खड़ा होना, नाक का बाल होना। हिन्दी में मुहावरों की आवश्यकता इसलिये पडी ताकि बात को संक्षिप्त में बोल सके, अनेक मुहावरों में अलंकारों का भी प्रयोग होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि प्रत्येक मुहावरे में अलंकार होता है। कुछ मुहावरें अलंकार युक्त होते है–जैसे– ''सोना सोना ही होता है'' इस वाक्य में 'अनन्व' अलंकार होता है। कथानको, धर्मकथाओं, प्रथाओं आदि पर आधारित कुछ मुहावरें निर्भर होते है। मुहावरें भाषा को गतिशील

और रोचक बनाते है और उसके बिना निस्तेज, नीरस, निष्प्राण हो जाती है। यह लेखकों तथा अनुवादकों के लिये तो उपयोगी हे ही, सामान्य जन भी इसकी सहायता से दैनिक जीवन में बोली जाने वाली अपनी भाषा को चित्रमय और प्रभावी बना सकता है। आज की दुनिया में अच्छा बोलने वालों के लिये ही प्रभावी बना सकता है। आज की दुनिया में अच्छा बोलने वालों के लिये नहीं। इसलिये जिन्दगी की दौड़ में आगे बढ़ने के लिये इच्छुक व्यक्तियों के लिये भी 'मुहावरों' का विशेष महत्व है।

'मुहावरों की अपनी कुछ विशेषता होती है–

(1) मुहावरों का प्रयोग हमेशा वाक्य के प्रंसंग में होता है, अलग से कभी नहीं होता है।

(2) मुहावरे समाज की रीति–रिवाजों और परम्पराआ के निर्माण में सहायक होते है।

(3) मुहावरे का निर्माण देश काल तथा समाज के विकास।

(4) मुहावरा अपना असली अर्थ कभी नहीं बदलता है और न ही उन्हें पर्यायवाची शब्दों में अनुदिन नहीं किया जा सकता है।

(5) मुहावरों का अर्थ प्रसंग के अनुसार ही निश्चित होता ह।

(6) मुहावरे शब्द का शब्दार्थ ग्रहण नहीं किया जाता है। उसका केवल विशेष अर्थ में ही ग्रहण किया जाता है।

मुहावरे हिन्दी भाषा की समृद्धि और सभ्यता के विकास के मापन है। इसकी अधिकता या न्यूनता से भाषा को बोलने वाले को श्रम, भाषा निर्माण की शक्ति, अध्ययन मनन सबका एक साथ पता चलता है जो समाज जितना अधिक व्यवहारिक और कर्मठ होगा, उसकी भाषा में इसका (मुहावरों का) का प्रयोग उतना ही अधिक होगा। देश और समाज की तरह मुहावरें भी बनते बिगड़ते रहते हैं। नये समाज के साथ नये मुहावरे आते हैं। हिन्दी भाषा के ज्यादातर मुहावरे भाषा को सजीब बनाते है। मुहावरे के द्वारा भाषा में सरलता और सरसता आती है। मुहावरे द्वारा ही भाषा में प्रवाह व चमत्कार उत्पन्न होता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरलता, रोचकता, सजीवता, परिष्कार, प्रवाह और चमत्कार आ जाता है। मुहावरे में भाषा को विशेष आकर्षण एवम् प्राणवान बनाने की अद्भूत क्षमता होता है। मुहावरों के ललित प्रयोग से वक्ता अथवा रचनाकार की विशिष्ठ अभिव्यक्ति–क्षमता का ज्ञान होता है। जहाँ जितने अधिक मुहावरों का प्रयोग किया जाता है, वहां समाज उतना ही प्रगतिशील माना जाता है। वस्तुतः मुहावरें साहित्यिक रचना में विशेष स्थान दिया जाना चाहिये। एक आलोचक के शब्दों किसी भी भाषा में मुहावरों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह भाषा को अतिरिक्त संचार शक्ति प्रदान करता है। इसके प्रयोग से भाषा और भी सम्प्रेषणीय तथा प्रभावशाली हो जाती है। इन्हीं

विशेषताओं के कारण मानव जीवन में मुहावरों का प्रयोग निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। माननीय दृष्टिकोण से भाषा में प्रयुक्त मुहावरों की पहचान करना, उसका वर्गीकरण करना तथा उसके सामान्य एवं लाक्षणिक अर्थों में भेद करना सरल है, किन्तु सगंणकीय, दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। मुहावरों का संसाधन भाषा विज्ञान के विविध अनुप्रयुक्त क्षेत्रों (मशीनी अनुवाद, भाषा–शिक्षण संगणकीय भाषा विज्ञान आदि) के लिये अभी भी चुनौती पूर्ण समस्या है। इसी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए मुहावरों की पहचान करने के साथ–साथ विविध आधारों पर उसका विश्लेषण तथा वर्गीकरण किया जाये। हिन्दी में मुहावरों का प्रयोग भाषा में रवानगी, ताजगी और अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता लाने के लिये किया जाता है। मुहावरें भाषा की लाक्षणिकता की धरोहर होते है। अपनो भाषा को वक्र अभिव्यक्ति में कहने की वक्ता की ललक मुहावरों के द्वारा पूरी होती है। ये ढली–ढलाई वक्रतायें हैं जो अपने स्थित अर्थ के बावजूद भी वक्ता के मनोभाव को चमक के साथ प्रस्तुत करती है। वक्ता अपने व्यापक अर्थ को एक मुहावरे में समेट कर संतुष्ट हो जाता ह। जिस लेखक या वक्ता में मुहावरें की पकड़ जितनी पैनी होती है, उसकी अभिव्यक्ति भी उपती ही सरस और चुटीली होगी।

2. विषय के अध्ययन क्षेत्र :—

विषय : आधुनिक युग में हिंदी, मुहावरों की उपयोगिता का मूल्यांकन।

(1) निर्माण के आधार पर :— मुहावरे शरीर के विभिन्न अंगो, पशु—पक्षियों तथा जन्तुओं, दैनिक जीवन पर सम्बन्धी, प्रसिद्ध व्यक्ति एवं संख्याओं के आधार पर मिलते है। जैसे—आँख का अंधा, पैर पटकना, गर्दन झुकाना।

(2) व्याकरणिक संरचना के आधार पर :— मुहावरों का निर्माण या सृजन होता है, जिसका अध्ययन, विश्लेषण वर्गीकरण एवं वाक्यों में प्रयोग करते समय उनकी संरचनाओं का बोध होना आवश्यक है। संरचना में शब्द भेद (संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम किया) एक निर्धारित क्रम में व्यवस्थित होते है। जैसेः— मूर्ख बनाना, उल्टी गंगा, खूद सफेद होना। कभी—कभी वक्ताओं के द्वारा वाक्य में प्रयोग करते समय मुहावरों की सरंचना (शब्द क्रम) को आवश्यकतानुसार बदल सकते है। लेकिन यह बदलाव मुहावरों की सरंचना से ही प्रेरित होते है। व्याकरणिक सरंचना के अनुसार ही मुहावरों का निर्माण या सृजन होता है। इसका अध्ययन विश्लेषण वर्गीकरण एवं वाक्यों में प्रयोग करते समय इसकी संरचना का बोध होना आवश्यक है।

(3) अर्थीय विश्लेषण के आधार पर :— कुछ मुहावरें ऐसे भी होते है, जिनका प्रयोग शाब्दिक एवं लक्ष्य दोनो प्रकार के अर्थों में किया जाता है। कहीं मुहावरे अर्थ और भाव की दृष्टि से समान होते है। जैसे : आग लगाना, कफन सिर पर बांधना आदि।

3. उद्देश्य :–

हिन्दी मुहावरों का भाषिक अध्ययन प्राकृतिक भाषा संसाधनों के सन्दर्भ में मानवीय दृष्टिकोण से प्रयुक्त मुहावरों की पहचान करना, उसका वर्गीकरण करना तथा सामान्य एवं लाक्षणिक अर्थों में भेद करना सरल है। किन्तु संगणकीय दृष्टिकोण से यह अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। प्रस्तावित शोध कार्य हिन्दी मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के प्राकृतिक भाषा संसोधन के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगी। इस शोध कार्य के अन्तर्गत भावमुक्त अभिलक्षणों की श्रेणी में केवल मुहावरों को सम्मिलित किया गया है। जो शोध कार्य की सीमा है अभिलक्षणों नियम, समूहों एवं भावकोश में विस्तार से अपेक्षा बेहतर परिणाम के साथ–साथ प्रणाली को गुणवत्ता एवं शुद्धता में वृद्धि हो सकती है।

(1) सामाजिक स्तर पर मुहावरों के महत्व की पड़ताल करना।

(2) वैज्ञानिक दृष्टि से मुहावरों की उपयोगिता।

(3) हिन्दी मुहावरों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक।

4. अध्ययन की रूपरेखा :—

(1) मुहावरों का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं विकास।

(2) मुहावरें की उपयोगिता :— लिखित व मौखिक रूप में।

(3) साहित्य में मुहावरों की आवश्यकता।

(4) वर्तमान समय में मुहावरें की उपादेयता।

(5) भविष्य में मुहावरें की प्रासंगिकता एवं अप्रासंगिकता।

5. शोध परिकल्पना :–

अध्ययन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये निम्नलिखित परिकल्पनायें तैयार की गयी है।

(1) मुहावरों का सामाजिक स्तर पर वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता।

(2) वैज्ञानिक स्तर पर आधुनिक जीवन में मुहावरों की उपयोगिता।

(3) हिंदी मुहावरों का वर्तमान जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषता।

(4) क्षेत्रों में विशेषता।

6. शोध प्रश्न :–

(1) प्राचीन समय में मुहावरों की क्या उपयोगिता थी ?

(2) वर्तमान समय में मुहावरों का औचित्य क्या है ?

(3) मुहावरें किस प्रकार से प्रभावशाली एवं सम्प्रेषणीय हो सकते है? इस पर विचार करेंगे।

(4) साहित्य में मुहावरों की क्या प्रासंगिकता है।

(5) वैज्ञानिक एवं तकनीकि युग में मुहावरों की विशेषता।

(6) सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में मुहावरें की स्थिति कैसी थी ?

(7) धार्मिक व आर्थिक जीवन में मुहावरें की क्या प्रासंगिकता है?

7. शोध पद्धति :–

प्रस्तावित शोध प्रबंध में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा अतीत के विचारों के आधार पर वर्तमान प्रासंगिकता ज्ञात करना। विश्लेषणात्मक विधि द्वारा पहले से उपलब्ध तथ्यों या जानकारी का उपयोग किया जायेगा और इस सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिये इसका विश्लेषण किया जायेगा। तुलनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत किन्हीं मापदण्डों के आधार पर दो या दो से अधिक परिस्थितियों अथवा तथ्यों की तुलना की जायेगा। शोध हेतु अनेक प्रकार की सामग्री संकलन हेतु प्राथमिक सामग्री एवं द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा।

आधुनिक युग में हिंदी मुहावरों की उपयोगिकता का मूल्यांकन हेतु प्राथमिक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक सामग्री को एकत्र करने के लिये प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा। इस शोध कार्य में द्वितीयक सामग्री का प्रयोग निम्नलिखित स्तर पर किया जायेगा।

(1) पुस्तकालय में उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर।

(2) पुस्तकों के आधार पर।

(3) लेख, पत्र–पत्रिकाओं के आधार पर।

(4) पूर्व में हुये शोध अध्ययन द्वारा।

वर्तमान समय में लिखित विद्वानों के ग्रन्थों से सामग्री प्राप्त की जा सकेगी। पत्र–पत्रिकाओं, शोध ग्रन्थों, इंटरनेट आदि की सहायता ली जायेगी, जिससे अध्ययन में समग्रता होगी।

8. साहित्य अवलोकन :–

(1) ओमप्रकाश गुप्ता, मुहावरा मीमांसा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1960।

(2) पुनीता पंचौरी मुहावरें, आर्थी संरचना एवं मनोभाषिकता वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, उत्तर प्रदेश 2006।

(3) डॉ. हरिवंश तरूण, मानक हिंदी मुहावरा लोकोक्ति कोश, प्रकाशन संस्थान दिल्ली।

(4) राजवीर सिंह, सरस्वती मुहावरा कोश, सरस्वती बिहार, दिल्ली।

(5) बद्रीनाथ कपूर, लोकभारती, हिन्दी मुहावरे और लोकोक्ति कोश, राजकमल प्रकाशन समूह दिल्ली।

(6) भारत भूषण सुरेश अवस्थी राजकमल अंग्रेजी हिंदी वाक्यांश एवं मुहावरा कोश, राजकमल प्रकाशन समूह दिल्ली।

(7) डॉ. हरदेव बाहरी हिन्दी मुहावरा शब्द–अर्थ–प्रयोग अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद। प्रस्तुत पुस्तक में लखक ने बताया है कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में मुहावरों का अपना महत्व है। फिर चाहे वह समाज हो परिवार हो, प्रत्येक स्तर पर अपना महत्व रखता है।

9. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

आधार ग्रन्थ :–

(1) हिन्दी मुहावरा कोश, डॉ. भवदेव पाण्डेय, प्रकाशन वाणी, नई दिल्ली।

(2) अंग्रेजी हिंदी वाक्यांश एवम् मुहावरा कोश, डॉ. भारत भूषण, डॉ. सुरेश अवस्थी, वाणी दिल्ली।

(3) मुहावरा कोश : हरिवंशराय शमा, राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली।

(4) मुहावरे एवम् लोकोक्तियाँ, आर.गुप्ता, वाणी प्रकाशन।

(5) हिंदी के मुहावरे एवं लोकोक्तियां, सुरेन्द्र प्रसाद गुप्ता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

सहायक ग्रन्थ :–

(1) राजपाल हिन्दी शब्द कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

(2) हिंदी मुहावरा कोश–डॉ. भोलानाथ तिवारी।

(3) हिंदी मुहावरे और लोकोक्ति कोश–डॉ. बदरी नाथ कपूर, लोक भारती प्रकाशन, प्रयाग–इलाहाबाद।

(4) मुहावरा और कहावत कोश : वीरेन्द्र देवांगन।

(5) उच्चतर हिंदी कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

(6) व्यवहारिक सामान्य हिंदी मुहावरे, डॉ. राघव प्रकाश पिंक सिटी पब्लिशस, जयपुर।

(7) अवधी मुहावरें व लोकोक्तियाँ, डॉ. जी. एस. श्रीवास्तव।

(8) हिन्दी मुहावरा कोश, डॉ. शोभाराम शर्मा, नैनीताल।